गोकुलपुर रू एक गाँव का मानवशास्त्रीय (एथोनोग्राफ़िक) अध्ययन

ऋचा शर्मा

Abstract

"परिवेश" व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करने वाला सबसे प्रभावकारी कारक है । शिक्षा–शास्त्र बच्चे के परिवेश को, उसके सीखने–पढ़ने तथा उसकी आशाओं–उम्मीदों को निर्धारित करने वाले, महत्वपूर्ण अव्यव के रूप में चिन्हित करता है । किंतु "परिवेश" से हमारा तात्पर्य क्या है इसको लेकर कोई एक राय नहीं है । क्या परिवेश से हमारा अर्थ घर और आस–पड़ोस से है? या कि एक वृहत्तर क्षेत्र जिसमें मोहल्ला, गाँव और गाँव के पार के समुदाय भी शामिल हों? परिवेश की क्या कोई सीमा है, कब हम अपने परिवेश से निकलकर बाह्य परिवेश में कदम रख देते हैं ? यह लेख, प्रसिद्ध समाजशास्त्री एम एन श्रीनिवास के " भारत के गाँव", श्रीलाल शुक्ल के लोकप्रिय उपन्यास 'रागदरबारी' तथा एस. सी. दुबे की पुस्तक 'भारतीय समाज' से प्रेरित हो, परिवेश को मानवशास्त्रीय (एथोनोग्राफ़िक) तरीके से समझने का एक प्रयास है । वस्तुतः इसमें एक गाँव का बिंदुवार अध्ययन करके यह जानने का प्रयास किया गया है कि गाँव का परिवेश क्या है । यहाँ यह भी समझने की कोशिश कि गयी है कि क्या एक परिवेश विशेष की अपनी कोई निश्चित सीमा है, जिसके बाहर के अव्यय इसे प्रभावित नहीं करते? हाँ और न, उत्तर की इन दोनों ही परिस्थितियों में परिवेश की समझ और बेहतर होने की आशा बनी रहती है ।

Keywords: *शिक्षा–शास्त्र, एथोनोग्राफी,*

"परिवेश" व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करने वाला सबसे प्रभावकारी कारक है । शिक्षा–शास्त्र बच्चे के परिवेश को, उसके सीखने–पढ़ने तथा उसकी आशाओं–उम्मीदों को निर्धारित करने वाले, महत्वपूर्ण अव्यव के रूप में चिन्हित करता है । किंतु "परिवेश" से हमारा तात्पर्य क्या है इसको लेकर कोई एक राय नहीं है । क्या परिवेश से हमारा अर्थ घर और आस–पड़ोस से है? या कि एक वृहत्तर क्षेत्र जिसमें मोहल्ला, गाँव और गाँव के पार के समुदाय भी शामिल हों? परिवेश की क्या कोई सीमा है, कब हम अपने परिवेश से निकलकर बाह्य परिवेश में क़दम रख देते हैं ? यह लेख, प्रसिद्ध समाजशास्त्री एम एन श्रीनिवास के "भारत के गाँव", श्री लाल शुक्ल के लोकप्रिय उपन्यास 'राग दरबारी' तथा एस सी दुबे की पुस्तक 'भारतीय समाज' से प्रेरित हो, परिवेश को मानवशास्त्रीय (एथोनोग्राफ़िक) तरीक़े से समझने का एक प्रयास है । वस्तुतः इसमें एक गाँव का बिंदुवार अध्ययन करके यह जानने का प्रयास किया गया है कि गाँव का परिवेश क्या है । यहाँ यह भी समझने की कोशिश कि गयी है कि क्या एक परिवेश विशेष की अपनी कोई निश्चित सीमा है, जिसके बाहर के अव्यय इसे प्रभावित नहीं करते? हाँ और न, उत्तर की इन दोनों ही परिस्थितियों में परिवेश की समझ और बेहतर होने की आशा है ।

गोकुलपुर, भोपाल से जयपुर की ओर NH–12 (जयपुर–जबलपुर) पर लगभग 51 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक कस्बा है। सामान्यतः भोपाल से गुना, कोटा, राजगढ़ एवं बाँसवाड़ा (राजस्थान) जाने वाली सभी गाड़ियों का यह सवारी ढिकाना है। साथ ही यहाँ के 'पालक के पकोड़े' एवं 'पान' मशहूर हैं, तो लोग यहाँ सफर के बीच सुस्ता लेते हैं। जहाँ

आपकी बस आपको उतारती है वहाँ खड़े होकर चारों तरफ नजर दौड़ाने पर आपको चाय–नास्ते की दुकानें, एक पेट्रोल पंप, पान की गुमठियां (छोटी पत्तरे की बनी दुकाने), एक मज़ार, मोटर–गाड़ी के गैरेज, हवा भरने के पंपों की गुमठियाँ एवं दो बड़े–बड़े विज्ञापन के 'कट–आउट्स' दिखाई देंगे। बस–स्टैण्ड कहलाने वाला इस स्थान पर आपको बस का स्टैण्ड कहीं नज़र नहीं आयेगा। होटलों के सामने सड़क से समानांतर ही बसें खड़ी हो जाती हैं, ऐसे में जब एक से दो बसे 'बस–स्टेण्ड' पर आ जाती हैं, सड़क के इस पार से उस पार कुछ दिखाई देना दुर्भर है। ये 'बस स्टेण्ड' लगभग 500 मीटर NH–12 के समानांतर सिमटा हुआ है। जमीन पर गुटखे के पाउच, कुरकुरे के खाली पैकेट, अन्य प्रकार के कागज एवं थैलियां जगह–जगह बिखरे पड़े नजर आते हैं। इस नज़ारे के मध्य सबसे सुकुन वाली कोई चीज़ नज़र आती है तो वह है दो बड़े–बड़े मिट्टी के घड़ों वाल 'निःशुल्क प्याऊ'! गिले–लाल कपड़ों से ढके ये घड़े ईंट–सीमेंट से बने पक्के चबूतरे पर रखे रहते हैं। पास में रखे होते हैं काँच के दो गिलास एवं घड़े से पानी उलीचने का बर्तन। इनमें पानी कौन भरता है, यह किसी को स्पष्ट पता नहीं, परन्तु जब कभी वह खाली हो जाते हैं, प्याऊ से जूड़ी पीछे वाली दुकान वाले ही इनमें पानी डाल देते हैं।

NH-12 पर गोकुलपुर आने की खबर तब लगती है जब बस का कंडेक्टर पीलूखेड़ी आने की आवाज देने लगता है। यह गोकुलपुर से लगभग 4–5 किलोमीटर की दूरी पर स्थिति है। यहीं बस पार्वती नदी का पुल पार करती है। लोग जेबों सिक्के निकालकर नदी में फेंकने का प्रयास करते हैं एवं कुछ बसें तो अगरबत्ती लगाने के लिए 2–5 मिनट रुकती भी हैं। यहाँ बीयर फैक्टरी, मैदा फैक्टरी, जिसे 'हिंद स्पीनर्स' के नाम से जाना जाता है, सबसे बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देती है। एक अजीब तरह की सुगंध (दुर्गंध) से पीलूखेड़ी के आने का संकेत खुद–ब–खुद मिल जाता है। फिर, पीलूखेड़ी से गोकुलपुर के मध्य इक्के–दुक्के पक्के मकान, एक सतसंग भवन, दो पक्के (खेल के मैदान सहित) स्कूल, एक सुसज्जित टेलीफोन एक्सचेंज भवन, एक पेट्रोल पंप एवं लगभग हर कंपनी के मोबाईल नेटवर्क वाले टावर दिखाई पड़ते हैं।

बस के गोकुलपुर 'बस स्टेण्ड' पर रुकते ही आस–पास की होटलों से कुछ बालक (8–16 वर्ष) पालक–पकोड़े, चाय, पानी–पाउच, मूँगफली हाथ में लिए बस में चढ़ जाते हैं। गोकुलपुर राजगढ़ एवं शाजापुर जिले के लिए राजधानी (भोपाल) पहुँचने का 'गेट–वे' है अतः यहाँ से शाजापुर जिले की दो तहसीलों शुजालपुर एवं कालापीपल के लिए गाड़ियाँ चलती हैं। ऐसे में दिन के हर पहर आवाजाही बनी रहती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बसाहट के अनुसार गोकुलपुर को चार भागों में विभाजित किया जाता है: बस स्टेण्ड, मण्डी, गाँव एवं खेड़ी। गाँव की बसाहट लगभग 700–800 वर्षों पुरानी है। वही मण्डी, खेड़ी एवं बस स्टेण्ड ने अपना वर्तमान स्वरूप पिछले 150 वर्षों के दौरान प्राप्त किया है। गाँव राजपूत मोहल्ला, कुम्हार मोहल्ला, चुमलिया की बाखल, मण्डलोई की बाखल, दला की बाखल एवं हरिजन मोहल्ला में विभक्त है। परन्तु स्वरूप में परिवर्तन आया है। 'बाखल' की चारदीवारी अब स्पष्ट नहीं रह गई है। एक मोहल्ला दूसरे में कब तब्दील हो जाता है इसकी स्पष्ट पहचान करना मुश्किल है। कहा जाता है कि यहाँ एक कबिलाई बस्ती के तौर पर पानी की उपलब्धता वाले इलाके की तलाश में भटकते हुए लोग नदी की समीपता के चलते बस गए।

अंग्रेजी हुकूमत के समय यह 'नरसिंहगढ़ रियासत'

का अंग रहा। जागीरदार पप्रसिंह यहां के पहले जागीरदार रहे। रियासत का थाना भी यहीं था, जिसे रियासतों के विलय के समय 20किलोमीटर दूरी (NH–12 पर नरसिंहगढ़ की ओर) पर स्थित एक गाँव कोटरा में स्थानांतरित कर दिया गया था, चूँकि कोटरा मुख्य सड़क से भीतर है अतः कुछ ही समय में थाना यहीं पुनर्स्थापित कर दिया गया। जो अब लगभग आज गोकुलपुर 70–80 गाँवों का थाना है। 1935–40 में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही 'ग्राम स्वराज्य' की लहर में यहाँ भी ग्राम–पंचायत की स्थापना की गई जो आज जिले की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत है। इसे नगर पंचायत बनाने के कई प्रस्ताव आए पर कुछ स्थानीय समूह इसका विरोध अपने निजी स्वार्थो के चलते करते रहे हैं।

सजीव मानचित्र

भोपाल से जयपुर की तरफ जाते समय गोकुलपुर में जिस तरफ बस आपको उतारती है ठीक वहीं से अंदर की तरफ एक सड़क जाती है। इसे कालापीपल सड़क कहते हैं। वहीं सीधे हाथ पर (कालापीपल सड़क के सामने) मज़ार के पास से एक सड़क उधर अंदर को जाती है, वह है 'लसूल्या रामानाथ पहुँच मार्ग'। गोकुलपुर की अधिकांश (95») बसावट कालापीपल सड़क के आस–पास या उसी पार है, उसके सामने वाली तरफ कुछेक बस्तियाँ हाल के कुछ वर्षो में बसी हैं पर वे NH–12 के सामानान्तर ही भोपाल की तरफ बढ़ती जा रही हैं न कि सघनता से फैल रही हैं। उस तरफ जो सघनता है वह 'लसूल्या रामनाथ' गाँव की ही है।

काला पीपल सड़क की तरफ रुख करते ही फलों के ठेले कतार में खड़े दिखाई देते हैं, शाम होते–होते सब्जियों के ठेले भी आ जाते हैं। लगभग 25–30 मीटर पर ही सीधे हाथ की तरफ एक पतली परंतु कांक्रीट की बनी सड़क अंदर की ओर जाती है, यह सीधे अस्पताल पहुँचती है। इसके समानान्तर नए घरों की कतार लग चली है। यह पिछले 10 वर्षो का ही परिणाम है। अस्पताल सड़क (गली–1) जहाँ समाप्त होती है वहाँ कालापीपल सड़क के समानांतर एक सड़क कालापीपल की ही तरफ बढ़ती है (गली–2)। गली–2 एवं कालापीपल सड़क के मध्य भी एक समानान्तर गली है (गली–3)। गली–3 के समानान्तर अभी कुछ नए पक्के मकान खड़े हुए हैं साथ ही खेत भी बचे हुए हैं जिनके बीच कहीं–कहीं पक्की कोठियाँ दिखाई पड़ जाती हैं। गली–3 का मार्ग बीच–बीच में अनियमित निर्माण से अवरुद्ध होता है, परन्तु यह अन्ततः कालापीपल मार्ग और गली–2 से कुरावर मण्डी की समाप्ति पर जाकर मिल जाता है।

पुनः यदि बस स्टेण्ड से प्रारम्भ किया जाए तो उल्टे हाथ की तरफ हर 10–15 मकान छोड़कर अन्दर की तरफ कुछ गलियाँ जाती हैं, परन्तु ये काफी अन्दर को न जाकर 2–4 मकानों के बाद खेतों में मिल जाती हैं। बस स्टेण्ड से लगभग 200मीटर अंदर निकल आने पर जो गलियाँ अंदर को जाती हैं वे कुछ सघन होने लगी हैं। लगभग 500मीटर (कालापीपल सड़क पर बस स्टेण्ड से) की दूरी तय करने के बाद जो गली उल्टे हाथ को अंदर जाती है वो काफी सघन बस्ती तक ले जाती है। इसी बस्ती से होकर पुनः एक गली कालापीपल सड़क के समानांतर चलने लगती है एवं मण्डी की समाप्ति पर अन्य गलियों कें घुल–मिल जाती है। (गली–4) बस स्टेण्ड से लगभग 1 किलोमीटर अंदर आने पर एक चौराहा पड़ता है। इस चौराहे से उल्टे हाथ पर जो कांक्रीट की 10 फीट चौड़ी गली अंदर जाती है वह गली–4 को चीरती हुई NH–12 से जाकर मिलती है।

मण्डी के अंत पर जहां गली–1, 2, 3, 4 मिलती

हैं वहां एक नाले पर पुल बना है। जिसे पार करते ही दो–राहा आता है। सीधे हाथ का रास्ता 'गाँव' को जाता है एवं उल्टे हाथ को सीधे आगे बढ़ने पर कालापीपल मार्ग पर ही 'खेड़ी' आती है।

सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि

यदि बसाहट के अनुसार लोगों की मुख्य आर्थिक गतिविधियों एवं सामाजिक स्थिति पर नजर डालें तो एक रोचक पहलू उभर कर सामने आता है। कृषि ही जीविका का मुख्य एवं एकमात्र आधार है। गाँव में मुख्यरूप से काश्तकार ही बसते हैं। स्त्री एवं पुरुष दोनों ही साल भर कृषि संबंधी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। काश्तकारों की प्रमुख जातियाँ खाती एवं देशवाली है। यह जातिगत विभाजन जितना सामाजिक है उतना ही राजनैतिक भी। पिछले 30 वर्षों में से 20 वर्ष सरपंच पद पर खाती समाज का ही सदस्य चयनित हुआ है। अन्य जातियों जैसे कुम्हार एवं हरिजन की भी मुख्य बसाहट गाँव में ही है। कुम्हारों का दर्जा चमारों, भंगियों (स्थनीय भाषा में हरिजनों के लिए प्रयुक्त शब्द) से ऊँचा है, एवं शादी–ब्याह में उनका विशेष सम्मान भी होता है। धोबी गाँव की मुख्य बसाहट का अंग नहीं रहे। चौरसिया (पान–कत्था का धंधा करने वाले) एवं बनियों तथा ब्राह्मणों के कुछ घर गाँव के बीचो–बीच स्थित है। कुछेक घर कायस्थों के भी हैं।

खेड़ी भी मुख्य रूप से काश्तकारों की ही बसाहट है, परन्तु ये काश्तकार गाँव के काश्तकारों की तुलना में ज्यादा समृद्ध हैं। वस्तुतः गाँव के वो काश्तकार जो अपने खेतों पर घर बनाकर रहने में सक्षम थे, उन्होंने ही 'खेड़ी' को बसाहट में तब्दील कर दिया। अतः खेड़ी पर रहने वाले अधिकांश परिवारों की कृषि भूमि उनके घर से लगी हुई है। गाय, बैल एवं भैंस प्रमुख पालतू पशु हैं। जिन्हें कवेलु की बनी बिना दीवार वाली छायादार जगह, जहाँ पानी की छाजन (मिट्टी की लंबी बनी पानी भरण की जगह) भी होती है, बाँधकर रखा जाता है। पशुओं की रहने की यह जगह जहाँ 'गाँव' में मुख्य घरों में ही एक भाग के तौर पर है, 'खेड़ी' में घरों से अलग कुछ दूरी पर स्थिति देखी जा सकती है।

खेड़ी से निकलकर मण्डी में आने पर आर्थिक परिवर्तनों की सुगबुगाहट होना शुरू हो जाती है। मण्डी की शुरुआत एक धर्मशाला एवं उसके ठीक सामने स्थित 'राम मंदिर' से होती है। पास ही में गाँव की पहली 'आरा मशीन' (लकड़ी को ईमारती लड़की में बदलने वाली मशीन) है। धर्मशाला के ठीक सामने आज से पाँच साल पहले तक एक विस्तृत मैदान था जिसमें 'हाट' (साप्ताहिक बाजार) के दिन सब्जी, फल और अन्य वस्तुओं का बाजार लगता है। चूँकि जमीन देशवाली समाज की थी, समाज ने निर्णय किया कि वहाँ हवनकुण्ड वाली 'यज्ञशाला' का निर्माण किया जाएगा अतः अब वहाँ 'यज्ञशाला' बन गई है। (कुछ लोगों का कहना है कि पिछले विधानसभा में देशवाली समाज के एक सदस्य को टिकट मिल सके इसके लिए उन्होंने 'यज्ञशाला' आधारशिला कार्यक्रम को बढ़ा मुद्दा बनाया गया। 'यज्ञशाला' उद्घाटन में 108 हवन कुण्डों पर लगातार 21 दिन तक कर्मकाण्ड का कार्यक्रम चला, जिसने आसपास की काफी जनता को आकर्षित किया। परन्तु यह बात कितनी सच है। यह ठीक–ठीक नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि पिछले चुनाव में देशवाली समाज से किसी सदस्य को किसी भी पार्टी से टिकट नहीं मिला।

'यज्ञशाला' के स्थान पर लगने वाला सब्जी बाजार अब स्कूल के मैदान में लगता है क्योंकि पंचायत के पास अन्यत्र इतनी बड़ी खाली जगह नहीं थी। यज्ञशाला के पास ही कालापीपल की ओर से आने वाली बसें रुकती हैं अतः कुछेक चाय–नाश्ते की

दुकानें यहाँ अच्छा धंधा कर लेती हैं। यज्ञशाला जहाँ समाप्त होती है वहीं से मुख्य बाजार प्रारंभ हो जाता है। परन्तु ये प्रारंभिक दुकानें छोटी हैं: आकार एवं सामान की मात्र की तुलना में। जिस तरफ यज्ञशाला है उसी दिशा में 'पंचायत का भवन' कुछ छोटी दुकानों के बीच स्थित है। पहले गाँव में ही पंचायत भवन था। सन् 2003–04 में इसे मण्डी में लाया गया। यह 'मण्डी' के उस दबदबे का परिण ाम है जो उसकी सबल आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति से उत्पन्न हुआ है। पंचायत भवन के बाद से ही बड़ी–बड़ी दुकानें प्रारम्भ हो जाती हैं–ये बड़ी दुकानें मुख्य रूप से 'किराने' (राशन) की हैं। बनिया वर्ग (वैश्य समाज) के लोग ही मुख्यरूप से इन बड़ी दुकानों के मालिक हैं। आसपास के 400–500 गाँव उधार एवं नगद दोनों रूपों में खरीद के लिए यहाँ आते हैं। वस्त्रें की बड़ी दुकानें भी बनियों द्व ारा ही संचालित हैं। स्टेशनरी एवं साज–सज्जा की दुकानें अन्य जातियों जैसे महेश्वरी बनियों (अग्रवाल एवं माहेश्वरी बनिये इन्हें 'नीचा' मानते हैं), ब्राह्मणों, पाटीदारों, कायस्थों द्वारा भी संचालित की जाती है।

ऊपरी तौर पर किराना एवं वस्त्र के धंधों में संलग्न वैश्य समाज का मुख्य धंधा ब्याज पर रकम उठाना है तथा 'गल्ला उठाना' यानि कृषि उपज मण्डी में बोली लगाकर अनाज खरीदना है। इन सबके साथ वैश्यों के पास ही अधिकांश बड़ी जोते भी हैं। ये अपनी जोतों पर दो तरह से सौदा करते हैं 1) बँटाई 2) कुड़ल्ला। 1– बँटाई से तात्पर्य है कि अपनी जोत किसी पास वाली जोत के काश्तकार को खाद एवं बीज के साथ दे दी जाती है, फिर कुल 'आमद' (उगाए गए अनाज) को दो हिस्सों में बाँट लिया जाता है। 'कुडल्ले' के तहत अक्षय तृतीया के दिन जोत को सलाना कीमत तय कर फसल उगाहने के इच्छुक व्यक्ति को सौंप दिया जाता है। फसल की लागत एवं उपज से भूमि के मालिक कोई मतलब नहीं रह जाता है। इन दो तरीकों के अलावा एक तीसरा बंदोबस्त भी 'गाँव' में प्रचलित है। वह है 'हाली' रखना। 'हाली' जोत की देखरेख, फसल संबंधी संपूर्ण जानकारी एवं सामान जुटाने वाला वह व्यक्ति होता है जिसे पुनः अक्षय तृतीया (आखातीज) के दिन सलाना आय पर रख लिया जाता है। पशुओं की पूरी देखभाल सिंचाई की उपयुक्त व्यवस्था करना भी हाली की जिम्मेदारी होती है। हाली रखने वाले काश्तकार को समय–समय पर खेत का मुआयना करते रहना पड़ता है। सामान्यतः भूमिहीन कृषक ही हाली बनते हैं। 'कुडल्ले' से जमीन भी भूमिहीन कृषक ही लेते हैं, परन्तु ये वे कृषक होते हैं जिनके पास वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध होता है। (वरन् फसल न होने की स्थिति में कुडल्ले की रकम अदा करना असंभव हो जाता है।)

बस स्टेण्ड तक मुख्य काला पीपल मार्ग के दोनों तरफ भिन्न–भिन्न दुकानें हैं। वस्त्रें की कुछ दुकानें 'सिंधी' समाज के लोगों द्वारा भी चलाई जाती है। 'बस टेण्ड' से कालापीपल मार्ग पर सीधे हाथ पर पहले 800 मीटर पर स्कूल का प्रांगण है फिर अगले 200मीटर पर थाना है। थाना ठीक पंचायत भवन के सामने पड़ता है। एवं स्कूल भव्य दुकानों के सामने। SBI बैंक भी स्कूल प्रांगण के पास ही है। स्कूल की बाउण्ड्री से सटकर मुख्य सड़क पर छोटी–छोटी गुमठियाँ लगी हैं, कुछ अण्डों की, कुछ चमड़े के हाथ से बने जूतों की, कुछ नाश्ते–पानी की। इन गुमठियों में कुछ गुमठियाँ 'कैरम बोर्ड' का खेल किराये पर (05 रुपये घण्टा) खिलाने का काम करती है। पिछले एक–दो सालों में 'कम्प्यूटर गेम्स' एवं 'स्क्वैश' भी किराये पर खिलाये जाते हैं। स्कूल का प्रांगण यूं तो बहुत बड़ा है पर इसकी आधी जगह में सामने की दुकानों का माल जैसे सीमेंट, सरिया आदि पड़ा रहता है। बाउंण्ड्री वॉल के नाम पर स्कूल तीन तरफ से गुमठियों से घिरा पड़ा है। एक ही प्रांगण में तीन अलग–अलग शाला भवनः हायर सेकेण्डरी स्कूल

भवन, माध्यमिक शाला भवन, नवीन प्राथमिक शाला भवन हैं। नवीन प्राथमिक शाला के पीछे बास्केटबॉल ग्राउण्ड के नाम पर सीमेंट का एक लम्बा चौड़ा चबूतरा भर हैं जो भी खस्ता हालत में हैं। शौचालय की व्यवस्था सिर्फ हायर सेकेण्डरी स्कूल भवन में ही हैं।

स्कूल के पास 'बस स्टेण्ड की तरफ' गली–3 पर एक बस्ती है जिसे ''कॉलोनी'' कहा जाता है। यह PWD द्वारा बसाई गई बस्ती है, जिसमें अधिकांश रहने वाले शिक्षक–शिक्षिका ही हैं अतः इसे 'शिक्षक–कॉलोनी' भी कहा जाता है। वैसे अब यह शिक्षकों ने अपने पुराने घर किराये पर देकर बस स्टेण्ड के निकट नवीन बस्तियों में 'बड़े घर' बना लिए हैं। किराये पर रहने वालों में मुख्यतः फैक्ट्रियों में काम करने वाले मजदूर हैं। कॉलोनी समाप्त होते–होते कुछ झुग्गियां अस्तित्व में आने लगती हैं जो गली–3 पर अस्पताल तक फैली हुई हैं। इनमें खटीक (मांस बेचने वाले), पिंजारे (रजाई–तकिये भरने वाले), कुछ अन्य पिछड़ी जातियाँ जैसे बसोड़ (झाड़ू बनाने वाले), चरवाहे (जिनके पास पांच–छः बकरियाँ होती हैं) रहते हैं। कुछ पिछड़ी मुस्लिम जातियों के सदस्य जो कबाड़ एकत्र करने का कार्य करती हैं वे भी इसी बस्ती में रहती हैं। इसी बस्ती में एक मदरसा भी है जो एक 'कबाड़ खरीदने वाले चाचा' (स्थानीय लोग इसी नाम से बुलाते हैं।) द्वारा चलाया जाता है। गली–3 से गली–2 के मध्य कुछ खेत शेष है जो बिक चुके हैं एवं जिन पर अब कृषि नहीं होती। कुछ खेतों को सुव्यवस्थित कॉलोनियों में काटा गया है जिनमें शिक्षकों, पुलिसवालों, मध्यम व्यापारियों, पंचायत कर्मचारियों, बैंक कर्मियों के मकान बनने लगे हैं।

काला पीपल मार्ग के उस पार यानी 'बस स्टेण्ड' से उल्टे हाथ पर कुछ इसी प्रकार की कालोनियां अस्तित्व में आने लगी हैं। गली नं–4 जहां अस्तित्व में आती है, वहाँ एक सघन बस्ती है जिसे 'छोटी जीन' कहा जाता है। यहाँ मध्यम श्रेणी के व्यापारियों के घर, अन्य जातियों जैसे कायस्थ, पाटीदार, तेली, राजपूतों के घर हैं। इसी बस्ती में सिंधी समाज के भी कुछ घर हैं। जीन में ही कुरावर की एकमात्र मस्जिद है, जो घरों से इस तरह सटी हुई है कि अजान की मीनार न हो तो पहचान आना मुश्किल है। मस्जिद से सटे हुए मकान मुसलमानों के हैं जो गली–3 की मुस्लिम बस्ती से भिन्न है। ये आर्थिक दृष्टि से ज्यादा संपन्न हैं। इनकी गाड़ी–मोटर के गैरेज, फलों–सब्जियों की दुकानें, माँस–अण्डों की दुकानें हैं। कुछ के 'लकड़ी के पीठे' (लकड़ी के बल्लियों की दुकान) भी हैं। गली–4 पर 'गाँव की तरफ बढ़ने पर खातियों के घर, काछियों की बस्ती (सब्जी उगाने वाले/फूलमाली) आती है। वहीं पास ही में 'नाईयों की चाल' है।

काला पीपल सड़क के सीधे हाथ पर स्कूल के बाद 'संभ्रांत मुस्लिम परिवारों' (जिनमें वोहरा भी शामिल हैं) के घर आते हैं। उसके बाद 'थाने के ठीक पीछे 'धोबियों के घर' तथा उनसे सटे हुए हरिजन के घर हैं। ये बस्तियाँ मण्डी का ही हिस्सा है। 'गाँव' एवं 'खेड़ी' पर धोबी समाज न के बराबर है। हरिजन समाज के अधिकतर परिवार आज भी मैला ढोने का काम करते हैं, कुछ सुअर भी पालते हैं। कुछ सदस्यों ने मिलरक 'बैण्ड–बाजा' मण्डली बना ली है। यह कुरावर की एकमात्र अपने प्रकार की मण्डली है। मण्डली के सदस्यों का अपने समाज में ऊँचा ओहदा है। सदस्यों के पक्के मकान और जीवन–यापन के पर्याप्त संसाधन भी हैं।

इन स्थानीय समुदायों के अलावा फैक्ट्रियों की वजह से यू–पी– एवं बिहार से बढ़ी संख्या में मजदूर वर्ग कुरावर में आकर बस गया है। जिनकी क्रमोन्नती हो

चुकी है एवं आर्थिक हालात कुछ बेहतर हैं उन्होंने स्वयं के मकान बनाना प्रारंभ कर दिए हैं। इनमें से कुछ शादी–ब्याह के लिए कुछ समय पहले तक अपने पुश्तैनी गाँव जाया करते थे, पर पिछले कुछ वर्षों से यह चलन घट गया है। स्थानीय समुदाय में पूर्ण स्वीकृति के लिए 'जमीन' होना, आज भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिनके पास अपनी स्वयं की जमीन या मकान नहीं है वे वृहतर तौर पर स्थानीय समुदायिक प्रक्रिया के अंग नहीं हैं। राजनीतिक दृष्टिकोण से देखने पर ज्ञात होता हैं कि किसी एक जाति या समुदाय या वर्चस्व तो है ही पर वास्तविक भूमिका वैश्य समाज निभाता हैं जो आर्थिक रूप से काफी सबल है।